कन्हैया काहे बात न मानत

कन्हैया काहे बात न मानत मोरी ॥
क्यूँकर जात करन चोरी तूँ , माखन की पर-दोरी,
किसी की तोड़े माखन-गगरी, किसी की बाँह मरोरी,
कन्हैया काहे बात न मानत मोरी.....

कौन कमी तोहे दही माखन की, क्यूँ करबै नित चोरी,
माखन चोर सुनत गोपिन मुख, छलके अँखियाँ मोरी,
कन्हैया काहे बात न मानत मोरी.....

बोले कृष्ण सुनौ री मैया,चंचल ब्रज की गोरी,
तूँ बातन उनके आ जाती,है मन की अति भोरी,
कन्हैया काहे बात न मानत मोरी.....

नैनन सैन बुलाकर मोहे, अंग लगावत छोरी,
कोऊ लेत गोद निज अपने,लेत बलैयाँ मोरी,
कन्हैया काहे बात न मानत मोरी.....

निज हाथन मोरे मुख माखन,देत लगाय निगोरी,
जान उमर कौ बारौ मोसें, करतीं हैं बरजोरी,
कन्हैया काहे बात न मानत मोरी.....

मोसें काम करातीं घर कौ, डाल प्रेम की डोरी,
लाज लगै मोहि तोह बतावत, निरलज सिगरीं छोरी,
कन्हैया काहे बात न मानत मोरी....

मैं क्या मोरी बला करै नहिं, काहूँ के घर चोरी,
मुदित मातु सुन बतियाँ नैनन, नीर 'अशोक' बहो-री,
कन्हैया काहे बात न मानत मोरी....

(रचना-अशोक कुमार खरे)

https://bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/4110/title/kanhiya-kaahe-baat-na-manaat-mori-kyu-kar-jaat-karn-chori-tu

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |